बालबोध

बालक बालिकाओं के लिये सुन्दर सचित्र मासिक पत्र

वर्ष ५] इलाहाबाद, जनवरी १९५१ [संख्या १

खेत

हरे भरे ये खेत लहलहे
हमको अति प्यारे लगते !

इनमें फूली सरसों प्यारी
मटर बालियाँ न्यारी-न्यारी
सजी खड़ी है सुन्दर क्यारी
भौंरे जरा नहीं थकते !

छाई इनमें है हरियाली
कृषक घूमते बन वनमाली
खुश होते लख छटा निराली

सुन्दर-सुन्दर खेत जगत में
दूनी सुन्दरता भरते !

सरदार पटेल

लेखक, श्री गोबिन्दराव मराठे

प्यारे बच्चो ! गत दिसम्बर महीने की १५ वीं तारीख को हमारे देश में एक बहुत ही दुखदायी घटना घट गई। उस दिन हमारे उप प्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की बम्बई में मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु की खबर बात-की-बात में सब जगह फैल गई और सारा देश दुःख में डूब गया।

उनकी मृत्यु पर भारत ही नहीं, विदेशों के बड़े-बड़े लोगों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की है। आओ, आज हम भी उनके जीवन की कुछ चर्चा कर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

सरदार पटेल का जन्म ३१ अक्तूबर सन् १८७५ ईस्वी को गुजरात के करमसद गाँव में हुआ था। इनका घराना एक साधारण किसान का घराना था। अपने पिता जवेर भाई पटेल से इन्होंने बचपन ही में साहस और बहादुरी का पाठ सीखा।

जब ये स्कूल में पढ़ रहे थे, तभी से यह मालुम पड़ रहा था कि ये आगे चलकर एक बहुत बड़े आदमी होंगे। ये लगन के बड़े पक्के थे। इन्होंने इसी समय बैरिस्टर बनने की ठान ली थी। इसमें बहुत सी दिक्कतें थीं, पर उन सब को दूर कर ये बैरिस्टर बन कर ही रहे।

सरदार पटेल बचपन ही से स्वतन्त्र प्रकृति के आदमी थे। इन्हें अन्याय से चिढ़ थी। किसी के ऊपर जुल्म होते ये न देख सकते थे। इनकी वकालत इतनी अच्छी चलती थी कि अगर ये चाहते, तो जीवन भर मौज उड़ाते। पर नहीं, अंग्रेजों के जुल्म ने इनके दिल में स्वतंत्रता की आग भड़का दी और सन् १९२० में अपनी वकालत छोड़ ये गाँधी जी के साथी बन गये।

आंदोलन में पड़ने के बाद ये एक समय ऊँची श्रेणी के नेता साबित हुए।

बारदोली के किसान सत्याग्रह के नेता ये ही थे। सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भी इनका बहुत बड़ा हाथ था। देश-सेवा के इस कठिन कार्य में इन्हें बड़ी-बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं और कई बार जेल जाना पड़ा। पर ये हमेशा उत्साही, साहसी, दिलेर और अडिग बने रहे। इनके इन्हीं गुणों से इन्हें 'भारत का लौह पुरुष' कहा जाने लगा।

सरदार पटेल अपने पौत्र के साथ

भारत स्वतंत्र हो जाने पर ये देश के उप प्रधान मन्त्री बनाये गये। इसके अलावा इनके जिम्मे और भी कई विभाग थे। यह सब काम इन्होंने बहुत अच्छी तरह निबाहा।

पर अभी देश को सरदार पटेल की बहुत जरूरत थी। उनके उठ जाने से उसकी बहुत भारी क्षति हुई है।

नेपाल

नेपाल में आजकल गृहयुद्ध हो रहा है। गृहयुद्ध उस लड़ाई को कहते हैं, जिसमें एक ही देश के लोग दो दल बना कर आपस में लड़ने लगते हैं।

नेपाल के इस गृहयुद्ध का कारण क्या है? सुनिये। नेपाल के महाराजाधिराज श्री त्रिभुवन विक्रम शाह हैं। परन्तु उनको उसी तरह रहना पड़ता है, जैसे किसी मन्दिर में देवता की मूर्ति रखी रहती है और राज्य में क्या होता है, कहां कौन दुखी है कौन सुखी, इसका उनको कोई पता नहीं चलता। उनके नाम पर वहां के राणा राज करते हैं।

इससे ऊबकर वे दिल्ली भाग आये हैं। परन्तु नेपाल के राणा को तो मूरत चाहिए, सो उसने उनके तीन वर्ष के पोते को गद्दी पर बैठाल कर राज करना शुरू कर दिया है। इससे वहां के लोगों ने राणा को हटाकर प्रजातन्त्र राज्य बनाने की लड़ाई छेड़ दी है।

हमारे प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू बीचबचाव कर रहे हैं और आशा है कि कोई ऐसा मार्ग निकल आयेगा, जिससे यह गृहयुद्ध बन्द हो जायगा।
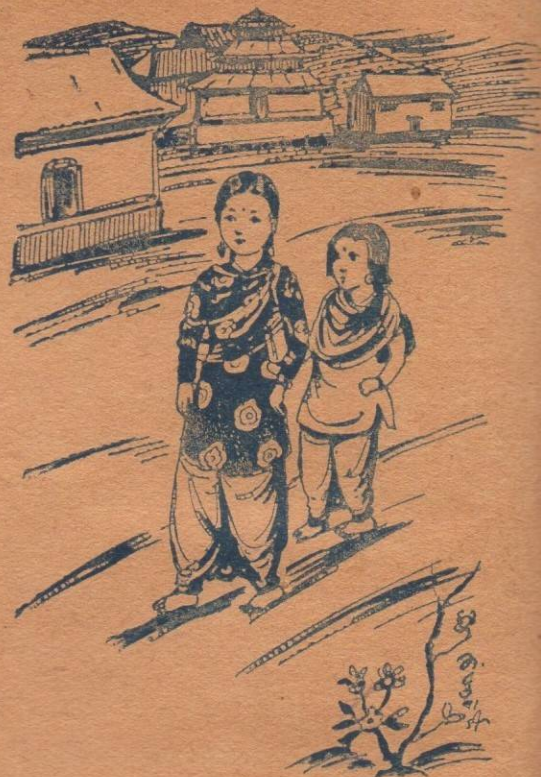
[काठमाण्डू में लड़कियां पढ़ने जा रही हैं।]

नेपाल हिमालय की चोटियों पर पूर्व-पश्चिम दूर तक फैला हुआ हिन्दुओं का स्वतन्त्र राज्य है। यहां के निवासी, जो गुरखा कहलाते हैं, लड़ने में बहुत वीर होते हैं। देश हराभरा है। पहाड़ों पर घने जंगल और धान के खेत है। ज्यादातर लोग खेती करते हैं।

यहां पढ़े-लिखे लोग कम ही मिलेंगे। राज्य भर में सिर्फ एक कालेज है और यहां-वहां लड़कों के स्कूल दिख जाते हैं। लड़कियों का सिर्फ एक स्कूल है, जो काठमाण्डू में है।

एक बहुत ही मजेदार कहानी

तीन ठग

प्रेषिका, कुमारी आशालता दुबे

एक मूर्ख सवार घोड़े पर कहीं जा रहा था। उसके साथ में एक बकरी थी, जिसे उसने पूंछ से बाँध रखा था। रास्ते में तीन ठगों ने उसको देखा। उन्होंने सोचा कि यह तो कोई मूर्ख मालूम पड़ता है और तीनों ने आपस में मिल कर उसे ठगने की सोची।

एक ने कहा—'मैं तो उसकी बकरी लूंगा।' दूसरे ने कहा—'मैं घोड़ा हथियाऊंगा।' तीसरे ने कहा—'मैं उसका कुर्ता ही उतरवा लूंगा पर फिर भी वह मुझे परम मित्र कह कर पुकारेगा।' तीनों आपस में यह निश्चय कर अलग हो गये।

पहले ठग ने पीछे जाकर चुपचाप बकरी खोल ली, उसके स्थान पर घोड़े की पूंछ से बकरी की घण्टी बाँध दी और लेकर चलता बना। कुछ देर बाद जब सवार ने मुड़ कर देखा, तो बकरी गायब थी। वह घोड़े पर से उतर कर उसे ढूंढने लगा।

इतने में उसे दूसरा ठग दिखाई दिया। सवार ने उससे बकरी के बारे में पूछा। उसने उत्तर दिया—'हाँ, अभी एक आदमी एक बकरी लिये हुए उस संकरी गली में गया है।' सवार ने उससे पूछा—'क्या उस सँकरी गली में घोड़ा जा सकता है?' ठग ने उत्तर दिया—'नहीं, उसमें घोड़ा नहीं जा सकता।'

सवार ने कहा—'तो आप कृपया मेरा घोड़ा देखते रहें। मैं अपनी बकरी खोज लाऊँ।' ठग राजी हो गया और सवार उसे धन्यवाद देकर आगे बढ़ा। ठग उसे दूर जाते देखकर घोड़ा लेकर चलता बना।

जब बकरी न मिली, तो सवार उस स्थान पर वापस लौट आया और घोड़े को न पाकर हैरान रह गया। घोड़ा और बकरी के खोने का उसे दुःख हुआ। वह आगे बढ़ा।

इतने में उसे किसी के रोने की

आवाज सुनाई दी। वह उधर गया तो देखा कि एक देहाती कुएं के ऊपर बैठा रो रहा है। यह तीसरा ठग था। वह उसके पास गया और उससे रोने का कारण पूछा। ठग ने उत्तर दिया—'मेरी एक हजार रुपये की थैली कुएँ में गिर पड़ी है।' सवार ने कहा—'तो निकाल क्यों नहीं लाते?' ठग ने उत्तर दिया—'मुझे तैरना नहीं आता। यदि तुम्हें आता हो, तो निकाल दो। मैं तुम्हें आधे रुपये दे दूँगा।'

सवार राजी हो गया और उसने अपना कुर्ता उतार कर ठग से कहा—'परम मित्र, तुम मेरा यह कुर्ता देखते रहो। मैं अभी तुम्हारी रुपयों की थैली निकाल कर लाता हूँ।' कुर्ता उतार कर सवार कुएं के अंदर कूद पड़ा। इधर ठग उसका कुर्ता ले कर चम्पत हुआ।

बड़ी देर बाद जब सवार कुएं से बाहर निकला, तो ठग और कुर्ते को न पाकर बड़ा हैरान हुआ और अपनी मूर्खता से तीनों चीजों को गँवा कर पछताता हुआ चला गया।

चूहों का गीत

जय जय लम्बोदर भगवान!
हम सब होवें मूस महान।
मरे बिलैया उपजै मेवा।
जय गणेश चूहों के देवा!
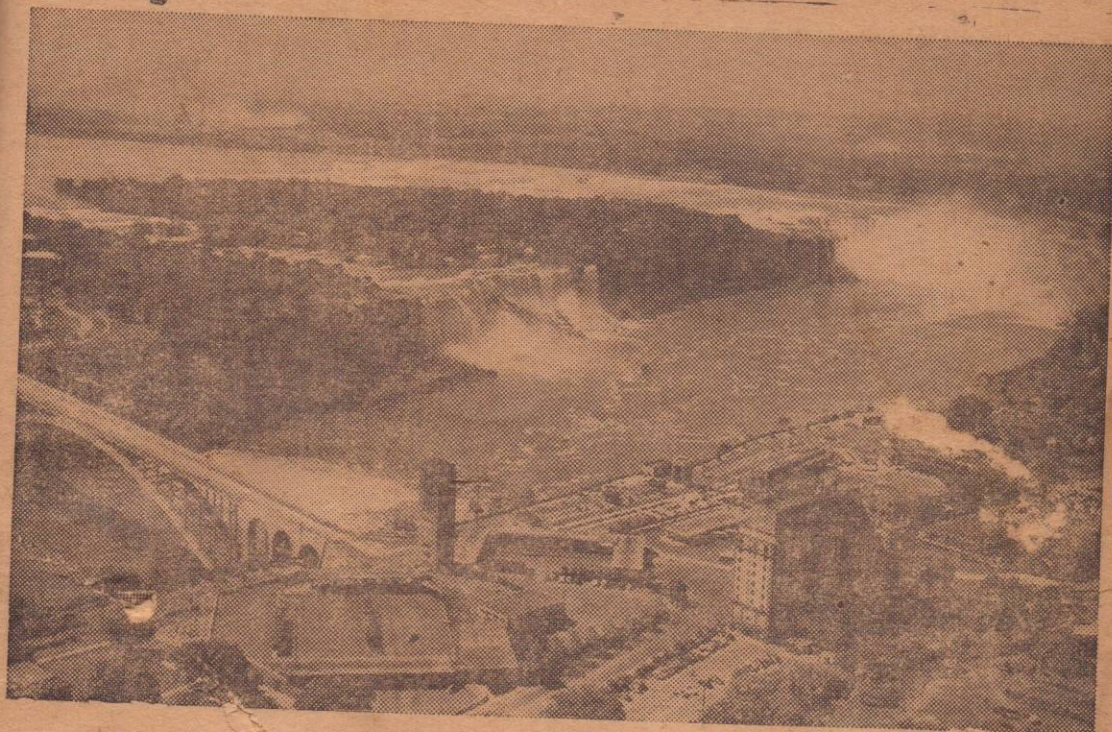
निआगरा का झरना

लेखक, श्री गोविन्दराव मराठे

प्यारे बालको! आज हम तुम्हें यहाँ अमरीका के प्रसिद्ध निआगरा झरने का कुछ हाल बताते हैं। तुम पूछोगे कि झरना है क्या? हां, तो पहले यही जान लो कि झरना क्या है।

तुमने पुराणों में यह कथा सुनी होगी कि राजा भगीरथी तपस्या करके गंगा नदी को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाए। अगर हम यह कहें कि सबसे बड़ा झरना राजा भगीरथ ने ही देखा, तो शायद गलत न होगा। क्योंकि गंगा की धारा को उन्होंने स्वर्ग से एकदम पृथ्वी पर गिरते देखा। इतनी ऊँचाई से गिरने वाला झरना और कौन हो सकता है!

हाँ, तो अब तुम्हें शायद यह मालूम हो गया होगा कि झरना क्या है। जमीन की सतह कहीं-कहीं बदली हुई है। एक सतह से एकदम थोड़ा या बहुत नीचे दूसरी सतह आ गई है।

जमीन की इन्हीं ऊपरी सतह से निचली सतह पर गिरने वाली नदी की या और किसी पानी की धारा को झरना कहते हैं।

निआगरा के झरने अमरीका और कनाडा इन दो देशों की सीमाओं पर बहने वाली निआगरा नदी पर स्थित हैं और इसीसे इनका भी यही नाम पड़ गया है। ये झरने दुनियां का एक आश्चर्य कहे जा सकते हैं। ये १६७ फुट की ऊँचाई से गिरते हैं।

इन झरनों पर अमरीका और कनाडा दोनों देशों का अधिकार है। दोनों देश इनसे मित्रता के साथ एक सा फायदा उठाते हैं। इनके जल से ४७ लाख ५० हजार किलोवाट शक्ति की बिजली पैदा होती है, जिसका उपयोग घरों में रोशनी करने और कारखानों को चलाने में दोनों देश करते हैं।

इन झरनों को देखने के लिये भला उन देशों के लोग क्यों न जाते होंगे, जबकि तमाम दुनियां के लोग इन्हें देखने जाते हैं! ऐसे लोगों का तो तांता-सा लगा रहता है। जानते हो, साल भर में कितने लोग इन्हें देखने जाते हैं? कोई २० लाख से भी अधिक!

जादू का खेल

थोड़ा सा खाने का चूना पानी में घोल लो। उस पानी से एक साफ कागज पर कुछ लिखकर उस कागज को सुखा लो। अगर चूना दिखाई दे, तो पोंछ दो।

जब तमाशा करना हो, तो किसीको वह कागज देकर पूछो—'इस कागज पर क्या लिखा है?' कागज को साफ देख कर वह जवाब देगा—'कुछ भी नहीं।' तब तुम कुछ मंत्र-सा पढ़ते हुये उसे पानी में डुबाकर बाहर निकाल लो। अक्षर साफ-साफ दिखाई देंगे और दर्शक अचम्भा करेंगे

—बिनोदीलाल सक्सेना
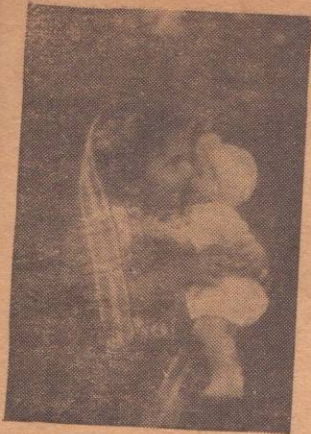
राजदुलारी

लेखक, श्री इन्द्रकुमार डागा 'कुमार'

काका जी के मन को भाती,
माँ की राजदुलारी है !
मोटी-तगड़ी भोली-भाली,
सबकी बिटिया प्यारी है !

कभी कहानी कहने लगती,
बन काका जी की नानी !
कभी नाचने लग जाती है,
करती रहती मनमानी !

दिन भर मुस्काती रहती है,
गाती है हरदम गाना !
चिड़ियों के-से गीत सुरीले,
फूलों का-सा मुस्काना !

गुड़िया पास हमेशा रखती,
बनती है उसकी माता !
माँ-बेटी का खेल रचाती,
बड़ा मजा है तब आता !

उसकी एक सहेली छोटी,
कुमकुम देवी जिसका नाम !
दोनों मिल कर गेंद खेलतीं,
घाम-रहित होती जब शाम !

२५ बातें

लेखक, प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए०

(१) प्रातःकाल उठकर बड़ों को हाथ जोड़ कर प्रणाम करो।

(२) बड़ों को सदा 'आप' कहो, 'तुम' नहीं।

(३) बड़ों के साथ चलो, तो उनसे एक दम पीछे रहो।

(४) मार्ग में यदि कोई चिट्ठी पढ़वाये, तो उसे पढ़ दो।

(५) किसी अपाहिज या निःसहाय को कोई आवश्यकता, हो तो उसकी मदद करो।

(६) रास्ते में शीशे का टुकड़ा, काँटा या इसी प्रकार की कोई चीज देखो, तो उसे हटा दो।

(७) किसी की कोई चीज तुम्हें मिले, तो उसे तुरन्त उसके मालिक के पास पहुँचा दो।

(८) प्रार्थना के समय आँख बन्द कर लो। कम-से कम एकान्त में १० मिनट अपना मन ईश्वर में लगाओ।

(९) सड़क के एक ओर से दूसरी ओर जाओ, तो चारों ओर देख कर जाओ।

(१०) जुआ न खेलो। लाटरी आदि से भी प्रेम न करो।

(११) धोबी को कपड़ा देते समय कमीज, कोट आदि की जेबें देख लो।

(१२) प्रातःकाल उठकर सबसे पहले शौच जाओ और फिर २ या ३ मील खुली हवा में घूमो।

(१३) प्रातःकाल घूमकर जब आओ, तो एक पाव दूध पियो।

(१४) खाने में फल और तरकारियों को अधिक स्थान दो।

(१५) चाय और सिगरेट न पियो।

(१६) खाना खाने के पहले हाथ, और मुँह धो डालो।

(१७) मिठाई, चटपटे, पकवान, जहाँ तक सम्भव हो, बहुत कम खाओ।

(१८) खाना इस प्रकार खाओ कि वह थाली से बाहर या कपड़ों पर न गिरे।

(१९) रोज ८ या ९ बजे ठंडे पानी से स्नान करो।

(२०) भीतर की बनियाइन रोज साफ करो।

(२१) मोजों की भी सफाई करो।

(२२) साफ कपड़े पहनो। यदि तुम्हारे पास पैसों की कमी हो, तो अपने हाथ से अपने कपड़े साफ कर लिया करो।

(२३) जिस कमरे में रहते हो, उसे हमेशा साफ रक्खो।

(२४)सोते समय मुँह को मत ढाँको।

(२५) जब तबिअत कुछ खराब मालूम हो, तो एक दिन का उपवास कर डालो। याद रखो, दवा खाने से उपवास करना अच्छा है!

अमरीका में चौपायों की देखभाल पर बहुत ध्यान दिया जाता है। इस चित्र में वहां का एक चरवाहा अपने चौपायों को चराता हुआ दीख पड़ रहा है।
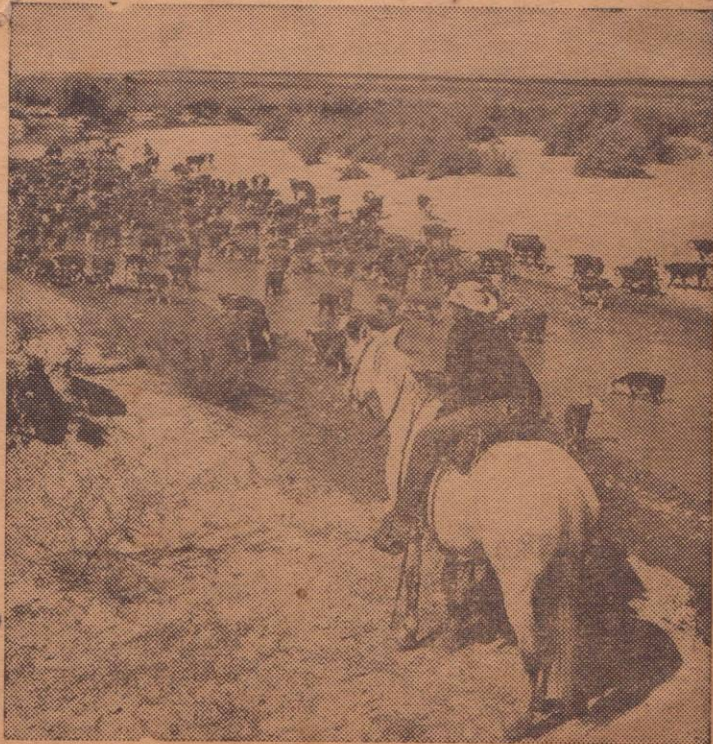
मजेदार कहानियां

आदर्श पुत्र

एक बार एक सिपाही अपनी स्त्री तथा लड़के को घर पर छोड़ कर एक लम्बी यात्रा पर गया। बहुत दूर निकल जाने पर वह एक दूसरे देश में पहुँचा, जहाँ दुर्भाग्य से वह गिरफ्ता हो गया और जेल में ठूंस दिया गया। किन्तु उसे एक बात की स्वतंत्रता दी गई कि वह अपने घर वालों को चिट्ठी लिखकर अपना हाल बताये और उन्हें अपने को कैद से छुड़ाने के लिये कुछ धन जमा करने को कहे।

उसकी स्त्री यह बुरी खबर सुनकर इतनी रोई कि वह अन्धी हो गई। अब लड़का मुसीबत में पड़ गया, क्योंकि उसे कुछ सूझता ही न था कि वह क्या करे! वह अपने पिता की मदद के लिए दौड़ जाना चाहता था, पर अपनी अंधी माता को छोड़ कर जाना भी उसके लिये कठिन था।

इस बारे में कुछ देर सोचने के बाद उसने अपने पिता को छुड़ाने जाने का ही निश्चय किया। परन्तु इसके पहले उसने अपने दोस्तों से कहकर अपनी मां के रहने और उसकी दवा-दारू का पूरा इन्तजाम कर लिया। फिर वह अपने पिता के पास पहुँचा और उसे छुड़ा लाया। वापस आने पर उसने देखा कि उसकी माँ की आंखों की रोशनी भी लौट आई है। इस तरह वे फिर मिल गये और सुख से रहने लगे।

दो कुत्ते

एक राजा के पास दो शिकारी कुत्ते थे, जिन्हें एक-दूसरे से कुछ दूरी पर जंजीर से बांध कर रखा जाता था। क्योंकि अगर उन्हें जरा देर के लिये भी खुला रखा जाता, तो वे एक-दूसरे पर झपट पड़ते और जोर से लड़ने लगते।

आखिर एक दिन राजा ने अपने सलाहकारों में से एक बुद्धिमान सलाहकार से कोई ऐसा उपाय बतलाने को कहा, जिससे की वे दोनों कुत्ते आपस में मित्र बन कर रहें।

सलाहकार ने बताया—'महाराज ! आप इन दोनों कुत्तों को किसी जंगल में ले जाइये और वहाँ जब किसी भयानक भेड़िये या जंगली सूअर को देखिये, तो एक कुत्ते को छोड़ दीजिये। वह जंगली जानवर उस पर हमला कर देगा और जब वह हारने लगे, तब उसी समय दूसरे को भी छोड़ दीजिये। यह उस जानवर पर झपट पड़ेगा और फिर इन दोनों का सामना करना उस जानवर के लिए कठिन हो जायगा।'

राजा ने ऐसा ही किया। एक भेड़िये के आते ही उसने एक कुत्ते को छोड़ दिया। जब वह हारने लगा, तब उसने दूसरे को भी छोड़ दिया। भेड़िया दोनों के सामने टिक न सका और भाग गया। इस मदद के लिये पहले कुत्ते ने दूसरे को प्यार किया और फिर वे दोनों मित्र बनकर रहने लगे।

मेहमान

एक राजा ने एक दावत दी, जिसमें उसने हर एक को बुलाया। उसने अपने राज्य के प्रत्येक शहर और कस्बे में लोगों को निमंत्रण देने के लिए दूत भेजे और यह भी घोषणा की कि जो लोग दावत में आयेंगे, उन्हें भोजन के साथ-साथ धन भी दिया जायगा।

एक कस्बे में एक तगड़ा और रोबीला आदमी था। पर वह दुर्भाग्य से अन्धा था। उसने इस बात पर बहुत दुःख प्रकट किया कि अंधा होने के कारण वह राजा का निमंत्रण स्वीकार नहीं कर सकता। पर उसी समय उसने सुना कि उसी कस्बे में एक लँगड़ा आदमी भी है, जो उसकी ही तरह राजा के यहाँ जाने में असमर्थ होने के कारण दुखी है।

तब इन दोनों आदमियों ने मिलकर राजा के यहाँ जाने का उपाय ढूंढ निकाला। दोनो में तय हुआ कि लंगड़ा आदमी अंधे आदमी के कंधों पर बैठेगा, अन्धा आदमी उसे लेकर चलेगा और तब लंगड़ा उसे रास्ता बतायेगा। इस तरह वे दोनों एक-दूसरे की मदद से राजा की दावत में पहुँच गये।

जाड़े की हवा

लेखक, श्री गोविन्दराव मराठे

बह रही सुबह से ही सन-सन
जाड़े की ठण्डी हवा आज !

सूरज बादल में छिपा हुआ
है कहीं धूप का नाम नहीं
मानों उसने ली छुट्टी है
कुछ आज करेगा काम नहीं !

मैं पहन गरम कपड़े अपने
सोता लिहाफ के अन्दर भी
फिर भी यह ठण्ड कँपाती है
थर-थर थर-थर थर बदन सभी !

ये बीच-बीच में बादल भी
हैं बरस रहे रिम-झिम रिम-झिम
है अंधकार इतना कि पड़
गया दिया जलाना टिम-टिम टिम !

क्या हाल बताऊँ मैं अपना
जाड़े के मारे ऐंठा हूँ
चारा न दूसरा बचने का
बस आग तापने बैठा हूँ !

यह हवा तीर-सी चल करके
घर में मेरे घुस आती है
हूँ दरवाजे सब बन्द किये
यह फिर भी ठण्ड बढ़ाती है !

औ सोच रहा मन में ऐसी
सर्दी से गर्मी ही अच्छी
हैरान हो गया हूँ अब तो
सूझता नहीं कुछ काम-काज !

बह रही सुबह से ही सन-सन
जाड़े की ठण्ठी हवा आज

शेर का शिकार

लेखक, श्री हनूमानदत्त शर्मा

कोई २०।२२ वर्ष पुरानी बात है। मैंने सुना कि कुंडलपुर के जंगलों में स्थित रमना केर खोह में शिकार प्रोग्राम चल रहा है। इच्छा हुई कि चलें, खुद भी देखें। पहुँचा, तो शिकारी अमीर खां पुराना परिचित निकला। उसने मुझे ऐसा पकड़ा कि मुझे भी इस प्रोग्राम में शामिल होना ही पड़ा।

बात यह थी कि केर खोह रमना ऐसी अटपटी बनावट का था, जो शेर के शिकार के लिये एक खतरनाक स्थान था और उसमें एक साल पहले ऐसे ही शिकार प्रोग्राम में एक शिकारी घायल हो चुका था। इसलिये यह अमीर खाँ शिकारी किसी ऐसे साथी की टोह में था, जो हाँके का संचालन ठीक रूप से कर सके।

इस खोह के दोनों ओर सीधी करारें थीं। आगे नदी का अथाह जल था और जल के उस पार शिकार खेलने वालों का मचान कि जहाँ से सिंह पर गोली चलाने की योजना थी।

शिकार का नियत समय आया। ढोल, ढमाके, रनसिंहा, कनस्तर आदि लेकर हांकेवाले इकट्ठे हुए। पड़ाव से लगभग एक डेढ़ मील चलकर हम रमने के सिरे पर पहुँचे। वहाँ एक पुलिस के इन्सपेक्टर शिकार पार्टी के साथ आये थे। वह भी हमारे साथ हो लिये।

हम लोग खोह में उतरे और हांका बढ़ाकर कोई ५० गज भी न चलने पाये थे कि वृक्षों की झाड़ी में से अंगड़ाई और जमुहाई लेते हुये, पूंछ नीची किये और मुंह ऊंचा उठाये धीमी चाल से शेर की सवारी निकल आई। मैंने डपट कर हांकेवालों से कहा कि बढ़ो आगे। पटाखे छोड़े, ढोल, ढमाका, कनस्तरों की भारी आवाज की। शेर ने गति पकड़ी। वह मुड़कर खोह में खिसकने लगा। हम लोग चौकन्ने होकर उसके पीछे बढ़ने लगे।

इस प्रकार सिंह को उठाते-हांकते हम एक भयानक स्थान पर पहुँचे। यहाँ

खोह के अन्दर एक और गहरा नाला था। हाँकेवाले लोग उस नाले में उतरने को तैयार नहीं हुए। अन्त में सबसे पहिले उस नाले में उतरने के लिये मैं तैयार हुआ। मेरे पीछे हांके वाले लोग आने को राजी हो गये।

मैं नाले में कूद पड़ा। मेरा कूदना था कि शेर ने एकदम दहाड़ दी। ऊपर इन्स्पेक्टर साहब ने नन्दा नाम के एक सहरिया के डंडा जमाया और कहा कि क्यों नहीं आगे बढ़ते ? सहरिया ने नाले की ओर हाथ करके उनसे कहा कि मारे क्यों डालते हो, नाले में तो बाप बैठा है !

संयोग से यह सब एक साथ हुआ। इसीलिये शेर मेरी ओर कूदने की धमक से तो उठा, पर उसने उठकर नन्दा का संकेत करता हुआ हाथ देखा। इसने झट से उसी हाथ को पकड़ कर धर दबोचा।

गजब का सीन था। प्रत्यक्ष आँखों के सामने मौत नाच रही थी। मैं न जाने किस सपाटे में नाले के ऊपर आ गया और बेतहाशा एक ओर भागा। खोह के करारे के पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि हांके के अन्य सहरिया सब के सब पेड़ों पर चढ़ गये थे। बेचारे इन्स्पेक्टर साहब वहीं के वहीं किंकर्त्त-व्य विमूढ़-से खड़े थे। मैंने उनसे कहा, जल्दी भागो, नहीं तो शेर के झपट्टे में आ जाओगे। तब वह मेरे पीछे भागे।

भागते-भागते एक स्थान पर पानी के टूटन का कुछ मार्ग सा मिला, जिसके सहारे हमने ऊपर चढ़ना आरम्भ किया। गिरते-पड़ते ऊपर पहुँचे, तब कुछ जान में जान आई।

अब बेचारे नन्दा सहरिया का ध्यान आया। सोचा कि नन्दा को कैसे मुक्त कराया जावे और कैसे उसके प्राणों की रक्षा की जाय ? बहुत सोचने के बाद एक बात समझ में आई कि हाँके के आगे एक दल भैंसियों का जुटाया जावे। आगे-आगे वह चलें, पीछे से हांके वाले आदमी हो-हल्ला करते चलें।

इस प्रकार नन्दा के पास पहुँचे, तो उसे क्षत-विक्षत जीवितावस्था में पाया। उसे नाले के ऊपर उठा कर लाये। वहाँ से उसे अस्पताल भेजा गया, जहाँ वह एक डेढ़ मास रह कर जीवित तो बच गया, पर उसकी बाँह, जो शेर ने खा डाली थी, काटनी पड़ी और एक बाँह से टोंटा होकर वह अपने घर आ सका।

वास्तव में यह नन्दा का ही कौशल था, जो इस प्रकार सिंह के मुख में से बचकर जीवित घर आ सका। जब-जब शेर ने नन्दा की गर्दन दबोचनी चाही, नन्दा ने वही क्षत विक्षत हाथ उसके मुख में घुसेड़ दिया, पर अपने कंठ की रक्षा करता रहा और इस प्रकार जब वह युद्ध करते करते बेबस हो गया, तब मुर्दा के समान सांस साध कर पट्ट गिर गया, जिससे शेर उसे मरा समझ कर छोड़ गया और अलग जा बैठा।

उधर शेर नाले में से उठ कर जैसे ही नदी के किनारे पहुँचा, उस पार मचान पर बैठी हुई शिकार पार्टी ने उस पर दनादन गोलियाँ दाग दीं और उसका काम तमाम कर दिया।
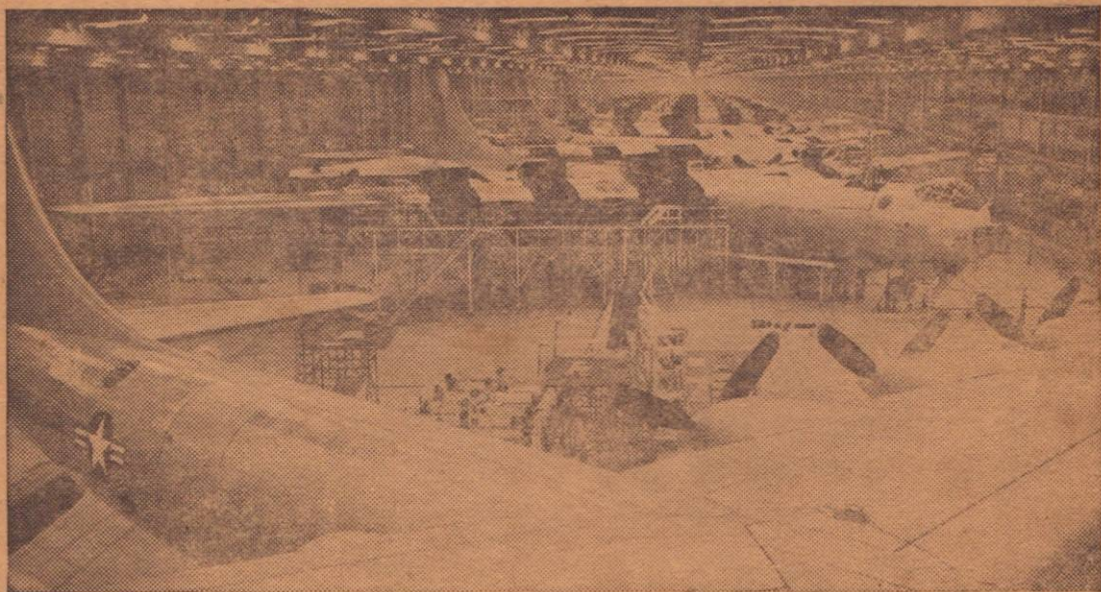
अमरीका के सब से बड़े बी-३६ किस्म के बमवर्षक वायुयान, जिनके डैने २३० फुट हैं। फिर भी ये इस इमारत से, जिसकी चौड़ाई सिर्फ २०० फुट है, आसानी से बाहर निकल आते हैं। जिन साधनों के सहारे ये बाहर निकलते हैं, उन्हें चित्र के मध्य में देखा जा सकता है।
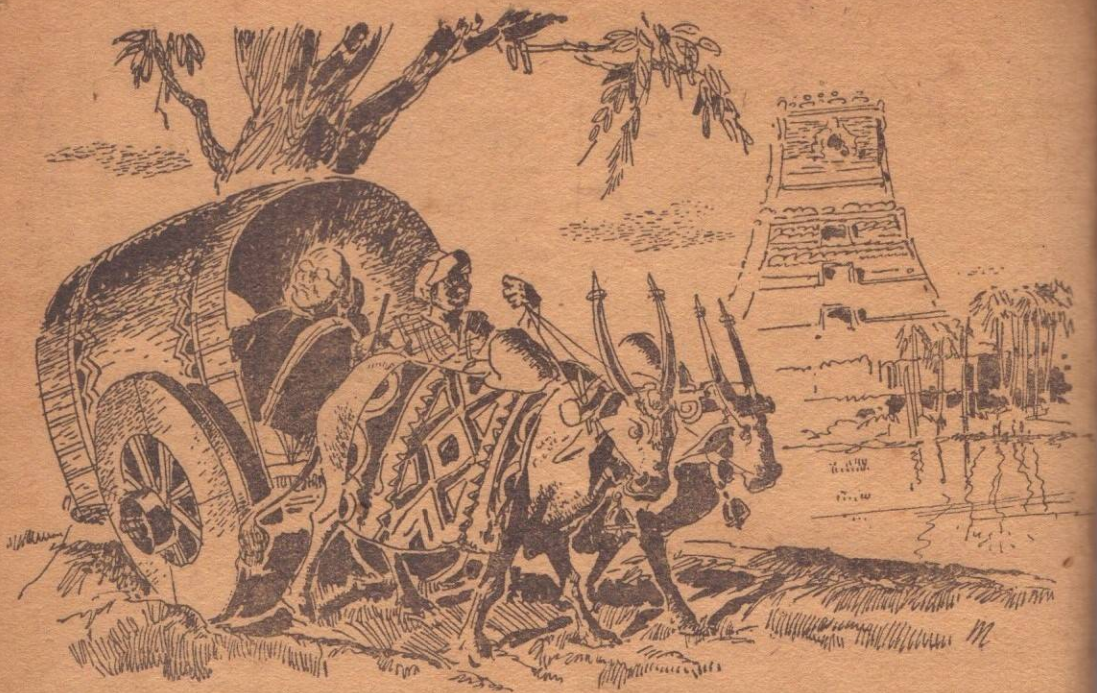
जमींदार अपनी बैलगाड़ी पर मीनाक्षीदेवी का दर्शन करने जा रहा है।

मीनाक्षी देवी

बहुत दिनों की बात हो गई, दक्षिण में गोदावरी के किनारे एक गाँव था। एक बार उस गांव में महामारी फैली और सब गांव वाले मर गये। सिर्फ एक छोटी सी लड़की बच रही।

वह गांव एक जमींदार का था जो पास ही दूसरे गांव में रहता था। जमींदार लड़की को अपने घर ले आया। जब लड़की बड़ी हुई, तब उसका व्याह किया और उसके पति को अपने यहां नौकर रख लिया और उसे उस उजड़े गांव की रखवाली का काम सौंपा। दोनों वहीं जाकर रहने लगे।

लड़की जमींदार को पिता के समान मानती थी, क्योंकि उसने उसे पाल[illegible] था। परन्तु उसका पति चोर था। व[illegible] मौका पाने पर जमींदार के नारियल[illegible] चोरी से तोड़ कर बाजार में बेच आता था।

जमींदार एक बार अपनी बैलगाड़ी पर मीनाक्षी देवी का दर्शन करने गया। इस बीच में चोर रखवाले की बहुत बन आई।

जमीदार अपनी गाड़ी पर लौटा, त[illegible] क्या देखता है कि रखवाला नारियल तोड़कर पेड़ से उतर रहा है! उसने

एक जमीन्दार के मरकर जिंदा होने की कहानी

जमींदार ने देखा कि रखवाला नारियल तोड़ कर पेड़ से उतर रहा है।

समझ लिया कि यही चोरी करता है और उसे एक रस्सी से उसी पेड़ से बँधवा दिया और कहा कि दिन भर इसे कोई मत खोलना।

शाम को लोग उसे खोलने गये, तो क्या देखते हैं कि रखवाला मरा खड़ा है। वे भागे हुये आये। जमींदार को सब हाल बताया। जमींदार को बहुत दुःख हुआ। पर क्या करता ? उसने रखवाले की स्त्री को, जिसे कि उसने पाला था, काफी धन देकर समझाया-बुझाया। रखवाले का एक लड़का था। जमींदार ने कहा—'जब बड़ा होगा, इसे बाप की जगह मिलेगी।'

लड़का बड़ा हुआ और बाप की जगह पर जमींदार के खेतों और पेड़ों की रखवाली करने लगा। एक दिन उसने एक चोर पकड़ा। उसे पेड़ से बाँधकर जमींदार से कहने चला। चोर बोला—'मुझे इस पेड़ से न बाँधो। इसी में तुम्हारे बाप को जमींदार ने बँधावया था, जिससे वह मर गया।'

रखवाले के लड़के ने चोर को छोड़ दिया। तब चोर ने सारा किस्सा बताया कि किस तरह रखवाला मारा गया था।

रखवाले के लड़के को यह सुन कर बहुत गुस्सा आया और उसी समय वह नारियल काटने वाली छुरी लेकर जमींदार के घर पर पहुँचा और उसके पेट में भोंक दी। जमींदार मर गया। रखवाले का लड़का पकड़ा गया।

जमींदार बहुत दयावान था। इसलिये सब गाँववाले बहुत दुखी हुए और गोदावरी के किनारे उसे ले गये, जहाँ वह चिता पर लेटा दिया गया।

लड़के की माँ दौड़ी हुई आई। वह सब से ज्यादा दुखी थी। पास ही मीनाक्षी देवी का मन्दिर था। वह उस मन्दिर में गई और देवी को उसने उठा लिया। देवी बोलीं—'मुझे कहाँ ले चलेगी?'

स्त्री ने कहा—'तुम्हें गोदावरी में फेंकूंगी, क्योंकि तुम्हारी पूजा रोज करती हूँ, पर कोई फल नहीं होता। तुमने मेरे पति को मरवाया। तुमने ही जमींदार को मरवाया और मेरे लड़के को जेल भेजवाया। तुम्हारा यहां रहना न रहना बराबर है। तुम्हारी पूजा कोई करे चाहे न करे।'

तब देवी ने कहा—'मुझे छोड़, मैं जमींदार को जिलाऊंगी।'

स्त्री ने देवी को मन्दिर में ठी जगह पर रख दिया और दौ हुई वहाँ आई, जहाँ चिता पर जमींदा लेटाया गया था और उसका लड़ उसमें आग लगाने जा रहा था।

औरत चिल्लाई—'ठहरो, वे जिन्द हैं!' लोग उसकी तरफ देखने लगे यह पागल तो नहीं हो गई है! प नहीं, वह पागल नहीं थी।

वह चिता के पास गई औ जमींदार को जो चादर ओढ़ाई गई थी उसे छूने लगी। तब लोग चिल्लाये—'य चांडाल कन्या अब बूढ़े जमींदार क छूकर अपवित्र करेगी!' और हट-ह की आवाजें उठने लगीं। पर वह स्त्री न मानी। उसने चादर पकड़ कर खींच ली। जमींदार उठ बैठा। वह स्त्री बोली—'मालिक, मेरे लड़के का कसूर माफ करो।'

यह खबर थाने पर पहुँची, तब रखवाला छोड़ दिया गया। जमींदार ने वह गाँव मय खेत और नारियल के पेड़ों के उस रखवाले को दे दिया और उस स्त्री की पूजा होने लगी। अब वह स्त्री नहीं है, पर जहाँ वह रहती थी, वहाँ एक मन्दिर बना है, जो छोटी मीनाक्षी देवी का मन्दिर कहलाता है।

बुलबुल

लेखक, श्री अमरीक सिंह भाटिया

एक दिन की बात है कि एक बुल-बुल बहुत उदास बैठी थी। उस स्थान से एक बकरी जा रही थी। इस चिड़िया को इतना उदास बैठे देख बकरी उसके पास गई और उससे पूछा—'तुम इतनी उदास क्यों हो?' बुलबुल ने कहा—'मेरे कोई मित्र नहीं है।' बकरी बोली—'तो क्या तुम मुझे मित्र बनाना पसन्द करोगी?'

बुलबुल ने कहा—'अवश्य!'

बकरी बोली—'तब मेरी एक शर्त पूरी करो।'

बुलबुल ने पूछा—'वह क्या?'

बकरी बोली—'अगर तुम मुझे कोई काम करके हँसा दो तो मैं तुम्हारी मित्र बन जाऊंगी।'

बुलबुल ने कहा—'बहुत अच्छा!'

यह कह कर बुलबुल बकरी को हंसाने की कोई तरकीब सोचने लगी। उस को सामने से दो यात्री जाते दिखलाई दिये। बस फिर क्या था! उसे एक तरकीब सूझी और वह बकरी को वहीं छोड़ कर उड़ गई।

एक यात्री दूसरे यात्री के पीछे था। आगे वाला यात्री अपने कंधे पर लाठी में अपना सामान लटकाये जा रहा था।

बुलबुल चुपके से उड़ कर उस लाठी के पिछले कोने पर थोड़ी देर बैठी। पीछे वाले यात्री ने जब यह देखा, तो उसने शीघ्रता से अपना जूता उतार कर उधर फेंका। पर तब तक बुलबुल उड़ गई थी।

जूता सामने वाले यात्री के सिर पर जोर से पड़ा। पीछे वाला यात्री हैरान था और आगे वाला यात्री बहुत क्रोध में था।

तब पीछे वाले यात्री ने बताया, 'आपकी लाठी पर एक बुलबुल बैठी थी। मैंने जूता उसी को मारने के लिए फेंका, पर वह उसको न लग कर धोखे से आपके सिर में लग गया।'

पर आगे वाले यात्री ने उसकी एक न मानी और कहा कि तुमने जान-बूझ कर मारा है। बुलबुल का तुम बहाना करते हो। अगर बुलबुल बैठी होती, तो क्या मुझे पता न चलता ?

इसी तरह बातों-बातों में उन दोनों में बहुत जोर की लड़ाई शुरू हो गई।

अब बुलबुल बकरी के पास आ गई और उसने उसको यह दृश्य दिखलाया। यह देख कर बकरी बहुत हंसी, प्रसन्न हुई और बोली—'तुमने मेरी शर्त पूरी कर दी है। अब मैं तुम्हें अवश्य मित्र बना लूँगी।'

बुलबुल भी बहुत प्रसन्न हुई कि उसको एक मित्र मिल गया। तब से वे दोनों सच्चे और पक्के मित्र बन गए।

जाड़े की ऋतु

लेखिका, कुमारी सावित्रीदेवी गहरवार

भैया जाड़े की ऋतु आई !
जो अमरूद-शरीफा संग में
लाल टमाटर-गाजर लाई !
सिंघाड़े और शकरकन्द भी
साथ बहुत से ढोकर लाई !
भैया जाड़े की ऋतु आई !

सर्दी लगने लगी जोर से
सभी ओढ़ने लगे रजाई ?
बैठ अँगीठी तापा करते
लगती धूप बहुत सुखदायी !
भैया जाड़े की ऋतु आई !

एक आदमी को पागल कुत्ते ने काट लिया। फौरन ही डाक्टर बुलाया गया।

मलहम पट्टी करने के बाद डाक्टर ने कहा—'प्राय: पागल कुत्ते के काटने से लोग भौंकने लगते हैं और भौंकते-भौंकते मर जाते हैं। इसलिये अच्छा होगा कि आप अपनी धन संम्पत्ति किसी को देना चाहें, तो उसकी वसीयत कर दें।'

आदमी ने तुरन्त ही कागज पेंसिल लेकर लिखना शुरू किया।

डाक्टर बोला—'जान पड़ता है, वसीयत बहुत लम्बी होगी!'

'जी नहीं, मैं उन लोगों की सूची बना रहा हूँ, जिनको मैं पागल होने पर काटूंगा।'

× × ×

सुधा के दादा बीमार पड़ गये। उसकी मां कपड़े गर्म पानी में उबाल रही थी। सुधा ने उसका कारण पूछा। मां ने कहा—'ऐसा करने से बीमारी के कीड़े मर जाते हैं।' तब सुधा बोल उठी—'तो फिर दादा को ही क्यों नहीं गर्म पानी में उबाल लेती ताकि सब कीड़े मर जायं!'

—निर्मल कुमार भाग्या, कोटा

एक जगह कुछ चोर बैठे चोरी के कपड़े बाँट रहे थे। चोरों को ढूंढ़ते हुए पुलिस वाले वहाँ आ पहुँचे। पुलिस को [illegible] एक चालाक चोर ने [illegible]

सवाल—से[illegible] काटकर अलग रख देने से पाला क्यों पड़ जाता है?

जवाब—जब सेव को दांतों से काट कर अलग रख दिया जाता है, तब उसमें की कोई चीज हवा में आक्सीजन वायु से मिल जानी है। इससे उसका रंग बदल जाता है। हम जानते हैं कि लोहे को खुली हवा में रख देने से उस पर जंग लग जाता है। इस जंग का रंग वैसा ही होता है, जैसा कटे हुए सेव का। इससे यह नतीजा

लड़का—अस्पताल !

—राम नरेशसिंह गहरवार; राठ

न्यायाधीश ने एक गवाह से पूछा—क्योंजी तुम उस चोर को जानते हो ?

गवाह—जी हां बिलकुल आप जैसा है।

× × ×

बाबू जी—मुंशी जी, जरा पेन खाली हो तो दे दो।

मुंशी जी—मालिक, इस में तो स्याही भरी हुई है !

—शान्ति देवी, खुर्जा

दो डाक्टर आपस में बात कर रहे थे। एक ने कहा—'मैं ऐसी दवा देता हूँ कि दो घंटे में मर्ज गायब हो जाता है।

दूसरे ने कहा—मैं ऐसी दवा देता हूँ जिससे दो घंटे में मर्ज और आदमी दोनों गायब हो जाते हैं।

—ललित कुमार श्रीवास्तव, प्रयाग
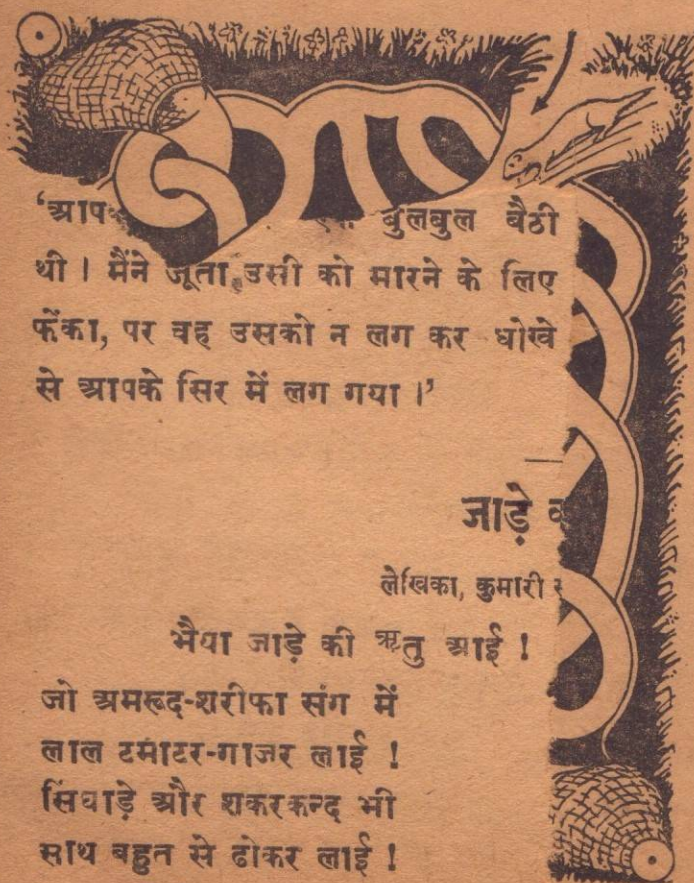
'आप ... बुलबुल बैठी थी। मैंने जूता उसी को मारने के लिए फेंका, पर वह उसको न लग कर धोखे से आपके सिर में लग गया।'

—

जाड़े ...

लेखिका, कुमारी ...

भैया जाड़े की ऋतु आई !
जो अमरूद-शरीफा संग में
लाल टमाटर-गाजर लाई !
सिंघाड़े और शकरकन्द भी
साथ बहुत से ढोकर लाई !
भैया जाड़े की ऋतु आई !

भूल भुलैया

खरगोश इस भूलभुलैया के बाहर निकल गया है। परन्तु नेवला अभी दरवाजे ही पर खड़ा है। आप भी उस के साथ खरगोश की तरह बाहर निकलने की कोशिश करें। परन्तु दोनों कोनों के जालों में न फँस जायं। जहां एक रास्ता दूसरे रास्ते के नीचे से गया है, वहां आप भी जा सकते हैं। कोई रुकावट नहीं है।

सवाल-जवाब

सवाल—गरम कमरे में फूल मुरझा क्यों जाते हैं ?

जवाब—फूल का आकार और टिकाऊपन बहुत कुछ उस पानी पर निर्भर रहता है, जो उसके भीतर होता है। कुछ फूलों के बारे में तो यह पूरी तौर पर पानी ही पर निर्भर करता है। हम जानते हैं कि गरमी पानी को सोख लेती है। जब कोई फूल किसी गरम कमरे में रख दिया जाता है, तब उस फूल का पानी उस कमरे की गरमी के कारण उसे छोड़ कर चला जाता है। इसीसे वह फूल सूखकर मुरझा जाता है। हाँ, अगर फूल का डण्ठल पानी में रखा जाय, तो उसे मुरझाने में देर लगेगी। क्योंकि उसके भीतर का जो पानी गरमी से सूखता रहेगा, उसकी जगह उसे कुछ हद तक नया पानी मिलता रहेगा। इसी को दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि पानी में ही जीवन है और जब फूल का पानी ही चला जाता है, तब वह अपना जीवन भी खो बैठता है।

इसका एक दूसरा भी कारण है। प्रत्येक फूल खुली हवा में जीवन पाता है और उसके स्नायुओं की बनावट इस प्रकार होती है कि वे खुली हवा की साधारण गरमी में काफी कड़े बने रहें। गरम कमरे में रखे जाने पर वे स्नायु अपनी असली शकल में नहीं रह पाते। क्योंकि वहाँ की गरमी उनके लिए खुली हवा की साधारण गरमी से कहीं ज्यादा होती है। इससे उनकी कड़ाई जाती रहती हैं और फूल मुरझा जाते हैं।

सवाल—सेव दांतों से काटकर अलग रख देने से पीला क्यों पड़ जाता है ?

जवाब—जब सेव को दांतों से काट कर अलग रख दिया जाता है, तब उसमें की कोई चीज हवा में आक्सीजन वायु से मिल जाती है। इससे उसका रंग बदल जाता है। हम जानते हैं कि लोहे को खुली हवा में रख देने से उस पर जंग लग जाता है। इस जंग का रंग वैसा ही होता है, जैसा कटे हुए सेव का। इससे यह नतीजा

निकलता है कि सेव में लोहे का जो तत्व रहता है, वही आक्सीजन वायु से मिलकर उसके रंग को बदल देता है।

सवाल—क्या आइने के सामने रखी हुई एक जलती मोमबत्ती दो मोमबत्तियों के बराबर है?

जवाब- इसमें कोई संदेह नहीं कि जब हम एक जलती हुई मोमबत्ती को आइने के सामने रख देते हैं, तब हमें लगता है कि हम दो मोमबत्तियाँ देख रहे हैं और दोनों से प्रकाश आ रहा है। अगर हम आमने सामने दो आइने रखें या ऐसे कमरे में मोमबत्ती जलायें, जिसमें कई आइने लगे हों, तो हम देखेंगे कि वहाँ हमें उतनी ही मोमबत्तियाँ दिखाई पड़ेंगी, जितने कि आइने हैं और प्रत्येक से प्रकाश आता हुआ मालूम पड़ेगा। पर वह असली प्रकाश नहीं होता। वह उसी अकेली मोमबत्ती का प्रकाश होता है, जिसे आइना वापस कर देता है और वह हमारी आंखों तक पहुँच जाता है।

नया वर्ष

लेखिका, कुमारी सावित्रीदेवी गहरवार

यह नव वर्ष तुम्हें सुखकर हो
बालबोध! तुम बढ़ते जाओ!
सभी बालकों के तुम प्यारे
उच्च शिखर पर चढ़ते जाओ!

आज तुम्हारा जन्म दिवस है
तुम सज-धज से नूतन आओ!

बिछें राह में फूल तुम्हारे
तनिक न काँटों से घबराओ

नित नवीन उल्लास हृदय में
भरकर तुम मुस्काते आओ!
उन्नति करो, फलो फूलो तुम
हम सब को हरषाते जाओ

न्यूटन की मूर्खता की कहानियाँ

लेखक, श्री प्रेमनारायण गौड़

न्यूटन युरोप का एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक था। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का पता उसी ने लगाया था। उसका नाम संसार के अमूल्य रत्नों में है। जानते हो वह कितना बड़ा मूर्ख भी था? यदि नहीं, तो सुनो।

एक बार उसकी स्त्री ने उसे एक अण्डा और घड़ी देकर कहा—'पाँच मिनट यह अण्डा पानी में उबलने के बाद निकाल लेना।'

थोड़ी देर बाद उसकी स्त्री फिर कमरे में आई तो वहाँ का काण्ड देख कर अवाक हो गई। उसने देखा घड़ी तो पानी में उबल रही है और न्यूटन अण्डे को बड़ी गौर से देख रहे हैं।

न्यूटन के पास एक पालतू बिल्ली भी थी। उसे वह एक काठ के बक्स में बन्द करके रखते थे। हवा और उसके आने जाने के लिये एक दरवाजा भी बना था। थोड़े दिन बाद उस बिल्ली के एक बच्चा भी हुआ।

एक दिन उनके कोई मित्र किसी काम से उनसे मिलने आये। उसने देखा न्यूटन एक तेज चाकू लेकर उस बक्स में दूसरा दरवाजा बनाने में व्यस्त हैं।

उनके दोस्त ने आश्चर्य से पूछा—'यह क्या?'

न्यूटन ने उत्तर दिया—'इसमें इस बिल्ली के आने जाने के लिए एक दरवाजा था। अब उसके एक बच्चा भी हो गया। इसलिए एक दरवाजे की औ जरूरत पड़ी। एक ही दरवाजा होने से कैसे काम चल सकता है?'

न्यूटन का एक किस्सा और प्रसिद्ध है। एक बार न्यूटन छड़ी लेकर कहीं टहलने गए थे। लौटते समय उन्हें बहुत थकान मालूम होने लगी। उन्होंने सोचा घर पहुँचते छड़ी एक किनारे रख थोड़ा लेटकर आराम करूँगा। घर पहुँचते ही उन्होंने छड़ी को खाट पर लिटा दिया और खुद किनारे खड़े हो गये।

नयी पहेलियाँ

[१]

मैं एक सुरीली आवाज वाली चिड़िया हूं। मेरा नाम चार अक्षरों का है और उसमें यह विशेषता है कि जो दो अक्षर पहले हैं, वे ही बाद में भी हैं। तो बताओ, मैं कौन हूं?

[२]

रमेश पहली बार कलकत्ते गया। वहां उसे एक ऐसी गाड़ी देख कर बड़ी खुशी हुई, जो पटरियों र तो चलती है, पर जिसे कोयला, पानी या पेट्रोल ी कतई जरूरत नहीं पड़ती। तो बताओ, उसने ौन सी गाड़ी देखी?

—गदाधर जोशी, बनारस

[३]

एक पहेली मैं कहूं,
सुन ले मेरे पूत!
बिना परों के उड़ गई,
बांध गले में सूत!

—अलक्षेंद्रपालसिंह, उरई

[४]

लाल रुकावै, हरी बढ़ावै,
काली-काली धूल उड़ावै।

—ब्रह्मेश्वर प्रसाद विद्यार्थी, आदरा

[५]

दो अक्षर का मेरा नाम,
खाने के आता हूं काम।
बात कहूं मैं बिलकुल सांच,
मुझे उलट कर देखो नाच!

[६]

अलग करो यदि सिर को मेरे तो सीना कहलाऊं
कितना कोमल हूं मैं देखो हवा लगे मर जाऊं!

—जसराज गुचिया, फलो

[७]

सिर काटो तो मर बनती मैं,
बनती कर धड़हीन।
पैर कटे तो कम हो जाती,
अक्षर केवल तीन।

—बी० बी० एन० महेश्वरी, सूरतग

[८]

तीन अक्षर का मेरा नाम,
मैं हूं कवियों में सरनाम।
आदि कटे योधा बन जाता,
मध्य कटे तो हाथ कहाता।

—भोला सिंह, बम्ब

नोट—इन पहेलियों को बूझिये और इनके उत्तर एक पोस्ट कार्ड पर लिखकर २० तारीख त हमारे पास भी भेजिये। जिनके सबसे अधिक उत्त

ठीक होंगे, उनमें प्रथम तीन को एक-एक सुन्दर पुस्तक इनाम में भेजी जायगी और शेष के नाम 'बालबोध' में छपेंगे। पर २० तारीख के बाद आये हुए उत्तरों पर कोई ध्यान न दिया जायगा।

दिसम्बर की पहेलियों के उत्तर

(१) पलंग (२) सूप (३) परछाईं (४) लाल मिर्च (५) खुरपी (६) मूली (७) शतरंज।

पारितोषिक-विजेता

निम्नलिखित तीन उत्तर-प्रेषकों को एक-एक सुंदर पुस्तक इनाम में भेजी गईः—

(१) श्री अरविन्द वैष्णव, नन्द प्रयाग। (२) श्री रामगोपाल तिवाड़ी, रामगढ़। (३) श्री जगदीश प्रसाद सिंह, सलटौवा।

अन्य उत्तर-प्रेषक

सर्वश्री अलक्षेंद्रपाल सिंह, उरई। राजेन्द्र पाल सिंह, उरई। राधेश्याम, जलालपुर। धर्मनारायण शुक्ल, बारा। अमृतलाल गुप्ता, पेन्ड्रा रोड। रघुनन्दन, माउण्ट आबू। कुसुम प्रभा, जालंधर। अजीत कुमार अखौरी, गुमला। रामलौटन गुप्ता, सई जलालपुर। रामकुमार सिंह गिधनी। शीला कुमारी मोहता, सिरसा। कस्तूरीबाई असाटी, पचमढ़ी। पद्माकर मांड वीकर, रीवां। विष्णु प्रसाद चांदगोठिया, गोरखपुर। राजेन्द्र कुमार बग्गा, कलकत्ता। कुंजविहारी मिश्र, जलालपुर। रामसागर सिंह, रामगढ़। चन्डी प्रसाद सिंह, कोल्हुआ। उमाशंकर पाण्डेय, मुंगराबाद शाहपुर। जबर बहादुर सिंह, ब्राह्मणपुर। सुशीला राजपूत, वनस्थली। दयाराम, कप्तानगंज। महादेव, रामपुर मुंगरा। शांति देवी, खुर्जा। ओम् प्रकाश, जालंधर। चन्द्रबली सिंह, फतेगंज। सरोज मुकर्जी, कालाकांकर। जगन्नाथ प्रसाद अग्रवाल, व्रजराजनगर। सुशील कुमार बग्गा, कलकत्ता। कृष्ण 'चमन' मूंधड़ा, सूरतगढ़। सत्यनारायण होलाणी, डीडवाना। बाहेती नारायण, सूरतगढ़। महेंद्र कुमार जैन, करनाल। 'भँवर' शर्मा, सूरतगढ़। शाकिर हुसेन, संथुआ। नवल कुमार अग्रवाल, किशनगंज।

अमरीकी सेना के ये सैनिक एक निरपराध भूखे कोरियन बालक को खाना खिला रहे हैं।

अपने विचार

नववर्ष की बधाई

नव वर्ष के शुभारम्भ में हम 'बालबोध' पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं को हार्दिक बधाई देते हैं।

एक प्रतिज्ञा

हमारे एक बाल पाठक ने लिखा है कि वे नव वर्ष के प्रथम दिन यह प्रतिज्ञा करेंगे कि वे पूरे वर्ष भर अपनी स्कूल में पढ़ने वाली किताबों को साफ-सुथरी रखेंगे और रोज का पाठ रोज याद करेंगे। यह प्रतिज्ञा सब बालक-बालिकाओं के करने योग्य हैं। पहली तारीख से न सही, जिस दिन से 'बालबोध' का यह अङ्क वे पढ़ें, उस दिन से यह प्रतिज्ञा जरूर करें।

नया सम्पादक-मंडल

नये सम्पादक-मंडल का चुनाव हो गया है। उ... के नाम यथा स्थान छापे जा रहे हैं। आशा है, ... अपने-अपने वादे के अनुसार कार्य आरम्भ कर देंगे।

इस अवसर पर हम पुराने सम्पादक मण्ड... को उनके कार्यों के लिए धन्यवाद देते हैं।

'बालबोध' का यह अङ्क

'बालबोध' का यह नववर्षाङ्क हम दूने पृष्ठों ... निकालना चाहते थे। परन्तु अखबारी कागज ए... एक वैसे ही कम मिलने लगा है, जैसे कि राशन ... हो गया है। हालत सँभली, तो हम यह कमी मार्च... पूरी कर देंगे, जब 'बालबोध' का होलिका... निकलेगा।
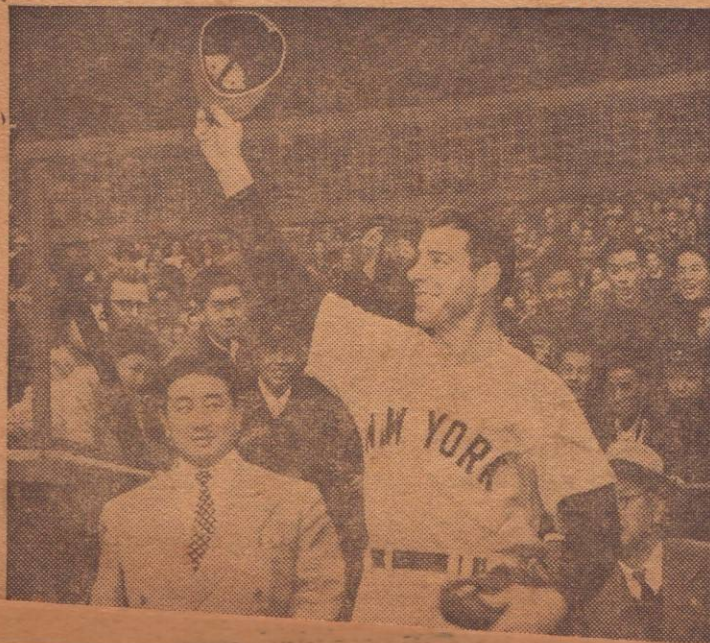
जोइ 'डिमेगिया' प्रसिद्ध अ... रीकन खिलाड़ी। युद्ध के घाय... को अपना खेल दिखा कर यह ... का प्रायः मन बहलाता है। आ... कल कोरिया में इसी काम के लि... गया है।

बालबोध के नियम

(१) बालबोध छोटे बच्चों का मासिक पत्र है। इसका वार्षिक मूल्य ४॥) और एक प्रति का ।=) है।

(२) वार्षिक मूल्य ४॥) भेजकर कोई भी व्यक्ति किसी महीने से ग्राहक बन सकता है। वार्षिक मूल्य मैनेजर बालबोध, 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद के पते से भेजना चाहिये।

(३) बालबोध हर महीने की तीसरी तारीख को प्रकाशित हो जाता है। यदि किसी ग्राहक को किसी महीने की प्रति न मिले तो उसे उसी महीने की १५ तारीख तक सूचित कर देना चाहिये। बाद को सूचना भेजने वालों को दुबारा प्रतियां न भेजी जा सकेंगी।

(४) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिए। यदि न लिखेंगे तो हमें आज्ञा-पालन करने में देर लगेगी।

(५) बालबोध में छपने के लिये लेख, कहानियां, चित्र आदि सम्पादक बालबोध, 'दीदी' कार्य्यालय, इलाहाबाद के पते पर भेजना चाहिये। न छपने की हालत में सिर्फ वे ही लेख आदि वापस किये जायँगे जिनके साथ आवश्यक स्टाम्प होगा।

(६) बालबोध का सम्पादन पांच बच्चों के एक सम्पादक-मंडल की सलाह से किया जायगा और इसका संचालन एक सलाहकार-मंडल द्वारा होगा। इस सम्बन्ध में आवश्यक सूचनाएँ 'बालबोध' में समय-समय पर छपती रहेंगी।

मुद्रक और प्रकाशक श्रीनाथसिंह, 'दीदी' प्रेस, इलाहाबाद।